भगत रविदास – सबद ९

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥

रागु आसा, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ४८६

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१॥
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥ रहाउ ॥
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥२॥
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥
राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥३॥३॥

सार: सद्गुण उन विशेषताओं को कहते हैं जो अच्छा अनुभव कराती हैं। उनकी संगति में रहने से शांति और आनंद मिलता है। सद्गुणी का साथ जीवन-यात्रा में एक संवेदनशील मार्गदर्शक की तरह होता है और चेतना तक पहुँचने का सेतु बनता है। लोहा आग के पास रखने पर दहक उठता है और ढलने योग्य मुलायम हो जाता है उसी तरह, सद्गुणी लोगों की संगति में हमारा मन ज्ञान से भरता है जिससे हमारा नज़रिया बेहतर होता है तथा हमारे विचार और काम ऊँचे उठते हैं। जीवन में वास्तव में जो मायने रखता है, वह महत्वाकांक्षा या भौतिक धन की तलाश नहीं है बल्कि मन की शांति और सच्चे रिश्ते बनाना है। इसी पोषक वातावरण में, हमारी कमियाँ भी विकास के कीमती अवसर में बदल जाती हैं और जीवन को समृद्ध करती हैं।

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
तुम सुगंधित चंदन हो और मैं एक साधारण अरंडी का पौधा हूँ जो तुम्हारी उपस्थिति में निवास करता है। 'तुम' का यह संदर्भ जागरूकता का प्रतीक है और यह दर्शाता है कि यह जुड़ाव हमारी मानसिकता को कैसे प्रभावित करता है।

नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१॥

एक साधारण झाड़ी से, मैं एक आलिशान भव्य पेड़ बन गया हूँ। मेरी बदबू तुम्हारी मनमोहक खुशबू से ढक गई है जो अब मुझमें समा गई है। यह परिवर्तन हमारे विचारों पर सार्थक संबंधों के गहरे प्रभाव को दर्शाता है। (१)

माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥

हे प्रिय सर्वव्यापी शक्ति, मन को सच्चाई से जुड़ने पर सुरक्षा मिलती है। यह बताता है कि सकारात्मक जुड़ाव हमारी प्रामाणिकता की भावना को बढ़ावा देते हैं जो हमें नकारात्मक विचारों से बचाते हैं।

हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥ रहाउ ॥

मेरा 'अहं' प्रतिबंधों से भरा है जबकि सर्वव्यापी जागरूकता परोपकारी शक्ति है। यह पहचान दिखाती है कि घमंड हमारे अहं से पैदा होता है जबकि विनम्रता उस ज्ञान से आती है जो जागरूकता को पोषित करता है। (१)(विराम)

तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥

तुम शुद्ध रेशम का धागा हो, जो श्वेत से स्वर्णिम हो गया है और मैं तुच्छ कीड़े के समान हूँ जो यश की चाह रखता है। यह दिखाता है कि ज्ञानी मान-सम्मान के पीछे नहीं दौड़ते जबकि अज्ञानी इसकी लालसा रखते हैं।

सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥२॥

हे प्यारी जागरूकता, सत्य को पाने के बाद उसको सँजोए रखो, जैसे मधुमक्खी मधु को सहेजती है। (२)

जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥
मेरी जाति नीची मानी जाती है, मेरा कुल नीचा समझा जाता है और मेरा जन्म तुच्छ ठहराया गया है। यह उन अनुचित सामाजिक ऊँच-नीच की संरचनाओं को उजागर करता है जो मनुष्य का मूल्य आंतरिक योग्यता के बजाय बाहरी पहचान से तय करते हैं।

राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥३॥३॥
सृष्टि की एकता की संप्रभुता का सम्मान नहीं किया जाता, रविदास, नीची जाति का चमार कहता है। यह सामाजिक अन्याय का खंडन है जो इस बात पर ज़ोर देता है कि सच्ची नीचता सार्वभौमिक एकता को न अपनाने में है। (३)(३)

तत्त्व: भक्त रविदास उनकी तथाकथित नीची जाति, साधारण वंश और मामूली जन्म को सामाजिक अन्याय के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वह याद दिलाते हैं कि यह मनुष्य की कीमत को कम करते हैं। वह हमसे हर इंसान में मौजूद स्वाभाविक मूल्य को पहचानने और सृष्टि की एकता की सेवा के महत्व पर सोचने का आग्रह करते हैं। वह सामाजिक अन्याय को अस्वीकार करते हैं, यह तर्क देते हुए कि सच्ची ज्ञान की प्राप्ति, सार्वभौमिक एकता की सेवा और उसे बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता में है। वह ज्ञान के माध्यम से बदलाव को एक रेशमी धागे के रूपक के तौर पर दिखाते हैं जो सादे श्वेत से चमकदार सुनहरे सोने में बदल जाता है। विनम्रता में, वह अपनी अज्ञानता की तुलना एक कीड़े से करते हैं और सकारात्मक प्रभावों के लिए एकता को अपनाने की इच्छा व्यक्त करते हैं जैसे एक मधुमक्खी शहद की ओर आकर्षित होती है। यह खोज उस ज्ञान को प्राप्त करने की आवश्यकता को दर्शाती है जो गहरी जागरूकता को बढ़ावा देता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com